Edited, typed and translated by
Dr. Som Pal, M.A; Ph.D.

KATHA UPANISHAD कठ उपनिषद

CHAPTER 1, Part I - अध्याय एक प्रथमा वल्ली

Invocation

ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै,
तेजस्विनावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ - Om सह - together नौ - us अवतु - protect सह - together नौ - us भुनक्तु – nourish सह - together वीर्यम् - energetic करवावहै - make तेजस्वि - vigorous नौ - us अधीतम् -what we have studied अस्तु - may be मा - not विद्विषावहै - quarrel with each other
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः - Om Peace Peace Peace.

We pray to God: May He protect us both (teacher and student), May He nourish us with Knowledge, May we acquire energy and become enlightened by this study, May we not quarrel over anything and become inimical
Om Peace ! Peace ! Peace !

हम दोनों (गुरू व शिष्य) सुरक्षित हों, हम दोनों एक साथ ही इस ज्ञान का भोग करें, यह ज्ञानमीमांसा दोनों को सामर्थ्य देने वाला हो, हमारा अध्ययन किया ज्ञान हमें यश देने वाला हो। हम कभी द्वेष न करें।

भुनक्तु (भुज् - भुनक्तौ to eat, to devour, consume) भरण-पोषण, भोग करना, उपयोग करना।

ओं उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसंददौ ।
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ १ ॥

ॐ उशान् ह वै वाजस्रवसः सर्ववेदसम् ददौ ।
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ॥ 1.

oṃ uśan ha vai vājaśravasaḥ sarvavedasaṃdadau |
tasya ha naciketā nāma putra āsa || 1 ||

उशन् (कामयमानः फलम्) ह वै वाजस्रवसः सर्ववेदसम् ददौ,

तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस ।

ॐ - Om उशन् - wishing for great rewards ह - indeed वै - truly

वाजस्रवसः - Vajasravasa सर्ववेदसं - his entire possessions ददौ - gifted

तस्य - his ह - so it was नचिकेता : - NACHIKETA नाम - named

पुत्रः - son आस - was.

Yearning (superior rewards), Vajasravasa gifted all his material wealth.
He had a son named Nachiketa.

वाजस्रवस ने सुख (मुक्ति/मोक्ष) की कामना से अपना सभी कुछ दान कर दिया। उनका नचिकेता नाम का पुत्र था।

उशन्- कायमानः (वश् कामये), कान्तौ, वशात्; वाजस्रवसः- वाजस्रवस्य पुत्रः; वाज- अन्न, एक शाखा, पिता, आहुति; सर्ववेदसम् - सर्वस्वम् धनम्, सब धन-धान्य, (सब वेद-ज्ञान); ददौ- दत्तवान्, दे दिया (आशीर्लिगं)

तम् ह कुमारम् सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाऽऽविवेश सोऽमन्यत ॥ २ ॥

तम् ह कुमारम् सन्तम् दक्षिणासु नीयमानासु
श्रद्धा-आविवेश ; सोऽमन्यत (सः अमन्यत्) ॥ 2.

taṁ ha kumāraṁ santaṃ dakṣiṇāsu nīyamānāsu
śraddhā"viveśa so'manyata || 2 ||

तम् ह कुमारम् सन्तम् (ऋत्विग्भ्यः) दक्षिणासु (गोषु) नीयमानासु श्रद्धा-आविवेश ; सः अमन्यत् ।

तम् - him ह - indeed कुमारम् - lad सन्तम् - being दक्षिणासु - the gifts

नीयमानासु - when they were fetched श्रद्धा - Faith आविवेश - overcame

सः - he अमन्यत - pondered.

On the gifts being fetched for giving/donation , Nachiketa, though a young lad, was overcome with religious fervor and he pondered:

वह कुमार अवस्था में ही था, परन्तु सबकुछ दिया जाता देखकर, जिसमें बूढ़ी गौएँ भी थी, (यह सब देख) उसके हृदय में श्रद्धा ने प्रवेश कर लिया। उसने ऐसा सोचा।

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान्स गच्छति ता ददत् ॥ ३ ॥

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ,
अनन्दा नाम ते लोकाः तान् स गच्छति ता ददत् ॥ 3.

pītodakā jagdhatṛṇā dugdhadohā nirindriyāḥ |
anandā nāma te lokāstānsa gacchati tā dadat || 3 ||

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः (एवम् समअभूता गावः ऋत्विग्भ्यः)

ता ददत् अनन्दा नाम ते लोकाः तान् स गच्छति ।

पीतोदकाः - which had drunk all water जग्धतृणाः - which had eaten all grass

दुग्धदोहाः - which had given all their milk निरिन्द्रियाः - without organs functioning

अनन्दाः - bliss-less नाम - indeed ते - they लोकाः - worlds तान् - to them सः - he

गच्छति - attains ताः - them ददत् - one who gifts.

Joyless, indeed, are the worlds to which he goes who gives as gifts such old cows that cannot calve nor produce milk any more. They had also drank water for the last time and eaten grass terminally. (Giving away useless articles as gift in a sacrifice is a sin and cannot bring good reward).

ये गौएँ जो पानी भी नहीं पी सकती, घास-चारा तक नहीं खा सकतीं, जिनका सब दूध दोहा जा चुका है, (जो अब दूध देने योग्य भी नहीं), जिनकी सभी इंद्रियाँ शिथिल हो चुकी हैं; ऐसी गौओं का दान करने वाला आनन्द-रहित लोकों में जाता है।

निरिन्द्रियाः जो प्रजनन में असमर्थ हैं, ऐसा अर्थ भी किया है।

स होवाच पितरं तत कस्मै मां दास्यसीति ।
द्वितीयं तृतीयं तँ होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति ॥ 4॥

स होवाच पितरम् तत ! कस्मै माम् दास्यसि इति ,
द्वितीयम् तृतीयम् तम् होवाच मृत्यवे त्वा ददामि इति ॥ 4.

sa hovāca pitaraṃ tata kasmai māṃ dāsyasīti ।
dvitīyaṃ tṛtīyaṃ taṁ hovāca mṛtyave tvā dadāmīti ॥ 4॥

स ह पितरम् उवाच, तत ! कस्मै माम् दास्यसि इति, द्वितीयम्, तृतीयम् ।
तम् ह उवाच मृत्यवे त्वा ददामि इति ।

सः - he (Nachiketas) ह - what a wonder उवाच - addressed पितरम् - (to) his father तत ! - O father ! कस्मै - to whom माम् - me दास्यसि - will you give away इति - thus द्वितीयम् - twice तृतीयम् - thrice (he asked) तम् - to him ह - astonishingly उवाच - replied मृत्यवे - to Death त्वा - you ददामि - I shall give इति - thus.

He addressed his father : "Father, to whom will you give me away?" He repeatedly said so, twice and thrice. Upon this, the father replied : "I shall give you to Death" .

(सब कुछ दान में दिया जाता देखकर) नचिकेता ने अपने पिता से कहा/पूछा, मुझे किसे दोगे? (पिता चुप रहा), फिर उसने दूसरी बार और फिर उत्तर न मिलने पर तीसरी बार भी यही पूछा। पिता ने कहा मैं तुझे मृत्यु को देता हूँ।

मृत्यवे त्वा ददामि- तुझे मृत्यु को देता हूँ।

नोट आचार्यय/गुरू को मृत्यु कहा गया है। आचार्य अपने कुल (गुरूकुल) में रखकर शिक्षा द्वारा नया जन्म देता है। "आचार्यो मृत्युः" ऋग्वेद ब्रह्मचर्य सूक्त।

शिक्षित मनुष्य को द्विज् कहा जाता है, जिनके दो जन्म होते हैं। पक्षी द्विज् हैं। पहला जन्म अंडे के रूप में और दूसरा अंडे से बाहर आने के रूप में। शिक्षित मनुष्य का पहला जन्म माता-पिता के द्वारा और दूसरा जन्म गुरू शिक्षा के द्वारा।

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः ।
किँ स्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति ॥ ५ ॥

बहूनाम् एमि प्रथमो बहूनाम् एमि मध्यमः,
किम् स्विद् यमस्य कर्तव्यम् यत् मया अद्य करिष्यति ॥ 5.

bahūnāmemi prathamo bahūnāmemi madhyamaḥ |
kim̐ svidyamasya kartavyaṃ yanmayādya kariṣyati || 5 ||

बहूनाम् एमि प्रथमो बहूनाम् एमि मध्यमः, किम् स्विद् यमस्य कर्तव्यम्
यत् मया अद्य करिष्यति।

बहूनाम् एमि - Among many I am प्रथमः - first बहूनाम् एमि - Among many I am
मध्यमः - middle किम् स्वित् - what perhaps could be यमस्य - Yama's
कर्तव्यम् - requirement यत् - which मया - by me अद्य - now करिष्यति - will attain.

(Nachiketas thought within himself) : Among many of (my father's disciples), I am either at the top or middle (but never at the bottom). What then will he achieve in giving me to Yama ?

नचिकेता ने यह सुनकर (कि वह मृत्यु को दिया जायेगा) सोचने लगा, मैं बहुतो में (अपने साथियों मे) प्रथम स्थान पर रहता हूँ और बहुतो में मध्यम स्थान पर तो फिर मृत्यु से आज मेरा क्या किया जायेगा?

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथापरे ।
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः ॥ ६ ॥

अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथा-अपरे,
सस्यम् इव मर्त्यः पच्यते सस्यम् इव आजायते पुनः ॥6.

anupaśya yathā pūrve pratipaśya tathāpare ।
sasyamiva martyaḥ pacyate sasyamivājāyate punaḥ ॥ 6 ॥

यथा पूर्वे अनुपश्य, तथा-अपरे प्रतिपश्य, मर्त्यः सस्यम् इव पच्यते,

सस्यम् इव पुनः आजायते ।

अनुपश्य - see यथा - in the same manner पूर्वे - earlier प्रतिपश्य - observe

तथा अपरे - so also others सस्यम् इव - like vegetation मर्त्यः - man

पच्यते - ripens (and decays) सस्यम् इव - like vegetation आजायते - is born पुनः - again.

Having looked behind those who have gone before (who's life ended before me); Also, if I look forward, with my eyes, in future, it seems like crop has ripen and grown/born again.

Remember how your forefathers behaved. Consider how men of worth conduct themselves today. Like vegetation man ripens and decays, and same, like vegetation he is born again.

(नचिकेता अपने मन में मृत्यु का नाम सुनकर हुई उथल-पुथल को स्वयं ही सुलझाने की कोशिश करता है) जो पहले हो चुके हैं, उन्हें देख; जो तेरे पीछे होंगे उन्हें देख; यह मर्त्य (मरणधर्मा) अन्न की तरह पैदा होता है, पकता है (नष्ट होता है) और अन्न की तरह ही फिर उत्पन्न हो जाता है।

(अगर नचिकेता का पिता इस बात को कहकर पछताया कि मैंने ऐसा क्यों कह दिया? (मैं अपने पुत्र को मरने के लिए कैसे कह सकता हूँ?) तब कुछ विद्वान इस तरह अर्थ करते हैं:

ज्ञानवान लोग ऐसा शोक नहीं करते। जैसे अपने से पहले हुये (पितामह आदि) लोग और वर्तमान धर्मात्मा, सज्जन लोग अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं, वैसे आप भी करिये। (आप मेरे जीवन की चिन्ता मत करें) मनुष्य तो खेत में उत्पन्न होने वाले अनाज की तरह है। पैदा होता है, पकता है, समाप्त होता है और फिर पैदा होता है। चक्र चलता रहता है।

अनुपश्य- आगे देखकर, विचार कर, (अनु-पश्य) क्रम से, पीछे देखकर (जैसे अनुकरण में)।
प्रतिपश्य- देखकर, पीछे देखकर (जैसे प्रतिक्रिया, क्रिया के बाद प्रतिक्रिया में)

वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान् ।
तस्यैताँ शान्तिं हर वैवस्वतोदकम् ॥ ७ ॥

वैश्वानरः प्रविशति-अतिथिः ब्राह्मणो गृहान् ,
तस्य एताम् शान्तिम् कुर्वन्ति हर वैवस्वत-उदकम् ॥ 7.

vaiśvānaraḥ praviśatyatithirbrāhmaṇo gṛhān ।
tasyaitām̐ śāntiṃ hara vaivasvatodakam ॥ 7 ॥

वैश्वानरः (इव) अतिथिः ब्राह्मणः गृहान् इविशति, वैवस्वत,

तस्य एताम् उदकम हर शान्तिम् कुर्वन्ति ।

वैश्वानरः - (like) Fire प्रविशति – enters अतिथिः - guest ब्राह्मणः - holy

गृहान् - houses तस्य – his एताम् - this शान्तिम् - appeasement कुर्वन्ति – do

हर - fetch वैवस्वत - O Yama उदकम् - water (for washing the feet and sipping).

(Nachiketas goes to the abode of Yama, but the latter was not at home. Nachiketas had to wait for three days without food. On Yama's return, he is told by his people): A Brahmana guest entering a house-hold resembles fire. He is offered appeasement. O ! Vaivasvata (Yama), fetch water (for washing the feet and sipping).

ब्राहमण अतिथि चमकती अग्नि के समान किसी के घर में प्रवेश करता है। हे वैवस्वत (मनु-पुत्र/ मनुष्य), इसीलिए अतिथि को जल आदि देकर (उस अग्नि की) शांति करते हैं ।

कुछ विद्वान दूसरी पंक्ति का अर्थ इस प्रकार भी करते है।
विवस्वान के कुलवंशियों ने (यमाचार्य की पत्नि, पुत्र आदि ने) इस अतिथि की जल आदि देकर, उसकी अग्नि को शांत किया, सत्कार किया।
या फिर इस तरह कि; यमाचार्य के घर वापस आने पर बताया गया कि कोई ब्राहमण बालक भूखा-प्यासा तीन दिन से उनकी प्रतीक्षा कर रहा है, आप उसे जल-पान आदि देकर तृप्त करें, शांत करे।

आशाप्रतीक्षे संगतँ सूनृतां चेष्टापूर्ते पुत्रपशूँश्च सर्वान् ।
एतद्वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यानश्नन्वसति ब्राह्मणो गृहे ॥ ८ ॥

आशाप्रतीक्षे सङ्गतम् सूनृताम् चेष्टापूर्ते पुत्र-पशून्-च सर्वान् ,
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्य-अल्पमेधसः यस्या अनश्नन् वसति ब्राह्मणः गृहे ॥ 8.

āśāpratīkśe saṃgataṁ sūnṛtāṃ ceṣṭāpūrte putrapaśūṁśca sarvān ।
etadvṛṅkte puruṣasyālpamedhaso
yasyānaśnanvasati brāhmaṇo gṛhe ॥ 8 ॥

यस्य अल्पमेधसः अनश्नन् ब्राह्मणः गृहे वसति, (तस्य) पुरुषस्य आशा प्रतीक्षे
सङ्गतम् सूनृताम् च इष्ट-आपूर्ते पुत्र-पशून्-च सर्वान्, एतद् वृङ्क्ते ।

आशा-प्रतीक्षे - hopes and expectations सङ्गतम् - benefits of good association

सूनृताम् - merit of good speech च - and इष्टापूर्ते - rewards arising from rituals prescribed in the scriptures and community welfare works.

पुत्र-पशून्-च - progeny and cattle wealth सर्वान् - everything एतद् - these

वृङ्क्ते - is destroyed पुरुषस्य - man अल्पमेधसः - of dull intellect यस्य - whose

अनश्नन् - starving वसति - stays ब्राह्मणः - brahmana गृहे - in the house.

Hopes and expectations, the benefits of association with the good, the merit arising from sweet and beneficial speech, the deeds prescribed in the scriptures and moral codes , children and cattle, all these are destroyed in the case of the person of dull intellect in whose house a holy guest has remained unattended.

आशा और प्रतीक्षा, आशा- निश्चित प्राप्य कामनाएँ, प्रतीक्षा- अनिश्चित अभीष्ट कामनाएँ, दोनों ही उसके (जो अतिथि का सत्कार नहीं करता) नष्ट हो जाते हैं। साधु पुरुषों की संगति और मीठी वाणी का फल भी नष्ट हो जाता है। इष्ट एवं आपूर्त, इष्ट जो यज्ञादि किये हैं, आपूर्त जो कुएँ बावड़ी, धर्मशाला, पाठशाला आदि बनवाये हैं, पुत्र और पशु आदि का सुख भी सब बेकार हो जाता है।

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीर्गृहे मेऽनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः ।
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व ॥ ९ ॥

तिस्रः रात्रीः-यदवात्सीः-गृहे मे-अनश्नन् ब्रह्मन्-अतिथिः-नमस्यः,
नमस्ते-अस्तु-ब्रह्मन् स्वस्ति मे-अस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व ॥ 9.

tisro rātrīryadavātsīrgṛhe me'naśnanbrahmannatithirnamasyaḥ |
namaste'stu brahmansvasti me'stu tasmātprati trīnvarānvṛṇīṣva || 9 ||

ब्रह्मन्-अतिथिः-नमस्यः, मे गृहे यत् तिस्रः रात्रीः अनश्नन् वात्सीः, नमस्ते असतु,

ब्रह्मन् स्वस्ति मे-अस्तु, तस्मात् त्रीन् वरान् प्रति वृणीष्व ।

तिस्रः - three रात्रीः - nights यत् – as अवात्सीः - stayed गृहे - in house मे - my

अनश्नन् - without food ब्रह्मन् - O! learned one अतिथि - a guest नमस्यः - is to be worshipped

नमस्ते - obeisance to you अस्तु - let there be ब्रह्मन् - O holy one स्वस्ति - well-being

मे - to me अस्तु - may there be तस्मात् - therefore प्रति - for each (night)

त्रीन् - three (nights) वरान् - boons वृणीष्व - choose.

Yama said to Nachiketas:
O holy and venerable guest, since you have dwelt in my house for three nights without food, choose three boons from me. I bow to you; may all be well with me.

हे ब्राह्मण! आपको मेरा नमस्कार हो, और आपकी प्रसन्नता से मेरा कल्याण हो। हे ब्राह्मण आप, तीन दिन भूखे रहकर मेरे घर पर मेरी प्रतीक्षा करते रहे, इसके लिए मैं फिर नमन करता हूँ । मेरी ही भलाई के लिए आप तीन दिन के प्रतिरूप में, तीन वरों का वरण कीजिए (तीन वर माँगिये)।

शान्तसंकल्पः सुमना यथा स्याद्वीतमन्युर्गौतमो माऽभिमृत्यो ।
त्वत्प्रसृष्टं माऽभिवदेत्प्रतीत एतत्त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे ॥ १० ॥

शान्त-सङ्कल्पः सुमना यथा स्याद् वीतमन्युः-गौतमो माभि मृत्यो ,
त्वत् प्रसृष्टम् मा अभिवदेत् एतत् त्रयाणाम् प्रथमम् वरम् वृणे ॥10.

śāntasaṃkalpaḥ sumanā yathā syādvītamanyurgautamo mābhimṛtyo |
tvatprasṛṣṭaṃ mābhivadetpratīta
etattrayāṇāṃ prathamaṃ varaṃ vṛṇe || 10 ||

मृत्यो, शान्त-सङ्कल्पः सुमना वीतमन्युः-गौतमो यथा मा अभि स्यात,

त्वत् प्रसृष्टम् मा प्रतीत अभिवदेत, एतत् त्रयाणाम् प्रथमम् वरम् वृणे ।

शान्तसङ्कल्पः - with peaceful disposition सुमनाः - of happy frame of mind

यथा स्यात् - may be वीतमन्युः - free from anger गौतमः - Gautama (my father)

मा अभि - towards me मृत्यो - O Yama! त्वत् - from you प्रसृष्टम् - released

मा - me अभिवदेत् - may receive प्रतीतः - recognizing एतत् - this

त्रयाणाम् - of the three प्रथमम् - the first वरम् - boon वृणे - I choose.

(Nachiketas thereupon said)
O Death, may I have the first out of the three boons in (my father) Gautama being in happy frame of mind and of peaceful disposition anger; and may he recognize me and receive me when I am released by you.

नचिकेता ने पहला वर माँगा। हे मृत्यो! मेरा पिता गौतम गोत्री, शांत संकल्प हो, प्रसन्न मन हो, क्रोध रहित हो, और जब मैं आपके पास से पिता के पास लौटूँ तो मुझसे प्रसन्नता के साथ बात करे। तीनों वरों में से पहला वर मैं यही माँगता हूँ।

यथा पुरस्ताद्भविता प्रतीत औद्दालकिरारुणिर्मत्प्रसृष्टः ।
सुखँ रात्रीः शयिता वीतमन्युःत्वां ददृशिवान्मृत्युमुखात्प्रमुक्तम् ॥ ११ ॥

यथा पुरस्ताद् भविता प्रतीत औद्दालकिः-आरुणिः-मत्-प्रसृष्टः ,
सुखम् रात्रीः शयिता वीतमन्युः-त्वाम् ददृशिवान् मृत्यु-मुखात् प्रमुक्तम् ॥ 11.

yathā purastādbhavitā pratīta auddālakirāruṇirmatprasṛṣṭaḥ ||
sukhaṁ rātrīḥ śayitā vītamanyuḥtvāṃ
dadṛśivānmṛtyumukhātpramuktam || 11 ||

यथा पुरस्तात् प्रतीत: भविता औद्दालिक: आरुणि: मत् प्रसृष्ट: गतमन्यु: सुखम् शयिता
मृत्युमुखात् प्रमुक्तम् त्वाम् दर्शितवान ॥

यथा – As पुरस्ताद् - in the past भविता - it shall be प्रतीतः - recognizer

औद्दालकिः आरुणिः - Auddalaki, son of Aruna मत् प्रसृष्टः - by my order सुखम् - happily

रात्रीः - nights शयिता - shall sleep वीतमन्युः - without anger त्वाम् - you

ददृशिवान् - having noticed मृत्युमुखात् - from the jaws of Death प्रमुक्तम् - set free.

(Yama said:)
By my order, Auddalaki Aruni (your father) will sleep peacefully at night. He will

recognize you and treat you as in the past, having seen you released from the jaws of death. And he will be without anger . (The mental agony caused to Nachiketa's father has been removed by the first boon).

यमाचार्य ने वर दिया और कहा, तेरा पिता उद्दालक, अरुण का पुत्र गौतम, तुझे मृत्यु के मुख से छूटा हुआ देखकर, पहले की तरह ही तुझसे प्रसन्न होगा। तुझे मृत्यु के मुख से छुड़ा हुआ देखकर, क्रोधरहित हो सुख की नींद सोयेगा।

स्वर्गे लोके न भयं किंचनास्ति न तत्र त्वं न जरया बिभेति ।
उभे तीर्त्वाशनायापिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १२ ॥

स्वर्गे लोके न भयम् किञ्चन्-अस्ति न तत्र त्वम् न जरया बिभेति ,
उभे तीर्त्वा-अशनाया-पिपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ 12.

svarge loke na bhayaṃ kiṃcanāsti na tatra tvaṃ na jarayā bibheti |
ubhe tīrtvāśanāyāpipāse śokātigo modate svargaloke || 12 ||

स्वर्गे लोके किंचन भयम् न अस्ति, हे मृत्यो: यत्र त्वम् न प्रभवति। न जरया विभेति।
उभे अशनाया-पिपासे तीर्त्वा, शोकातिग: स्वर्ग-लोके मोदते।

स्वर्गे - in heaven लोके - world न - no भयम् - fear किञ्चन - whatever be it
अस्ति - is there न - not तत्र - there त्वम् - You न - not जरया - due to old age
बिभेति - one fears उभे - both तीर्त्वा - having overcome अशनाया पिपासे - hunger and thirst
शोकातिगः - transcending sorrow मोदते - rejoices स्वर्गलोके - in the heaven.

(Nachiketa said:)
In heaven there is no fear at all ; death and old age are not there. Having overcome hunger and thirst and all sorrow, one rejoices in the heavenly world.

(नचिकेता दूसरा वर माँगता है) स्वर्ग लोक में किसी प्रकार का भय नहीं, न वहाँ तू (मृत्यु) है और न ही जरावस्था/बुढापा। स्वर्ग लोक में भूख-प्यास की विपदा से भी तर जाते हैं। द्वन्द्व (सुख-दुख, हानि-लाभ) से ऊपर उठ जाते हैं, शोक भी पीछे रह जाता है, बस आनन्द ही आनन्द रहता है

स त्वमग्निँ स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि त्वँ श्रद्दधानाय मह्यम् ।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद्द्वितीयेन वृणे वरेण ॥ १३ ॥

स त्वमग्निं स्वर्ग्यम् अध्येषि मृत्यो प्रब्रूहि तं श्रद्दधानाय मह्यम् ,
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण ॥ 13.

sa tvamagnim̐ svargyamadhyeṣi mṛtyo prabrūhi tvam̐
śraddadhānāya mahyam |
svargalokā amṛtatvaṃ bhajanta etaddvitīyena vṛṇe vareṇa || 13 ||

हे मृत्यो स त्वम् स्वर्ग्यम् अग्निम् अध्येषि, तम् मह्यम् श्रद्दधानाय प्रब्रूहि।
स्वर्गलोका: अमृतत्वम् भजन्ते। (तम् मह्यम् श्रद्दधानाय प्रब्रूहि) एतत् द्वितीयेन वरेण वृणे।

सः - that त्वं - you अग्निं - fire(sacrifice) स्वर्ग्यं - leading to heaven अध्येषि - know मृत्यो - O Death प्रब्रूहि - may you instruct तं - that (sacrifice) श्रद्दधानाय - of full faith मह्यम् - to me स्वर्गलोकाः - Seekers of heaven अमृतत्वं - immortality भजन्ते - achieve एतत् - this द्वितीयेन - by the second वृणे - I desire वरेण - boon.

O Death, You know the Fire (sacrifice) that leads to heaven.
Instruct me on that who am full of faith . Those in heaven are deathless. This I choose as my second boon.

हे यम! आप स्वर्ग प्राप्त कराने वाली अग्नि को जानते हो। मैं श्रद्धा पूर्वक पूछता हूँ, आप मुझे उसका उपदेश दें। जो स्वर्ग लोक में जाते हैं उन्हें अमरता प्राप्त होती है। उसी स्वर्ग साधक अग्नि का उपदेश आप मुझे करें। यही मैं अपने द्वितीय वर से माँगता हूँ।

प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध स्वर्ग्यमग्निं नचिकेतः प्रजानन् ।
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम् ॥ १४ ॥

प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध स्वर्ग्यम् अग्निं नचिकेतः प्रजानन्,
अनन्तलोका आप्तिम् अथः प्रतिष्ठां विद्धि त्वमेतं निहितं गुहायाम् ॥ 14.

pra te bravīmi tadu me nibodha svargyamagniṃ naciketaḥ prajānan |
anantalokāptimatho pratiṣṭhāṃ viddhi
tvametaṃ nihitaṃ guhāyām || 14 ||

प्र ते ब्रवीमि तद् उ मे निबोध । हे नचिकेत: स्वर्ग्यम् अग्निम् प्रजानन् अनन्तलोकाप्तिम्
अथ प्रतिष्ठाम् (लभस्व)। एतम् गुहायाम् निहितम् त्वम् विद्धि।

ते - to you प्रब्रवीमि - I shall narrate तदु - that,verily मे - form me निबोध - listen carefully स्वर्ग्यमग्निं - fire leading to heaven नचिकेतः - O Nachiketa प्रजानन् - knowing well अनन्तलोकाप्तिम् - means of attaining eternal heaven अथः - and प्रतिष्ठां - base विद्धि - know त्वम् - you एतम् - this निहितं - situated गुहायाम् - in the cave (of the heart).

O Nachiketa, I know about the Fire that leads to heaven. This I shall impart to you . Listen to me carefully. Know this to be the means of attaining eternal heaven and also the support of the world. This knowledge is hidden in the cave of the heart.

(यम ने कहा) मैं उस स्वर्ग साधक अग्नि को जानता हूँ। मैं उसे कहता हूँ, तू उसे समझ। वह अनन्त लोकों की प्राप्ति कराती है और उनको पाने का वह आधार है। वह अग्नि, गुहा (गुप्त-स्थान, गुफा) में स्थित है और उसको जानना समझना भी एक रहस्य की तरह ही है।

लोकादिमग्निं तमुवाच तस्मै या इष्टका यावतीर्वा यथा वा ।
स चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तम् अथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः ॥ १५ ॥

लोकादिम् अग्निं तमुवाच तस्मै या इष्टका यावतीर्वा यथा वा,
स चापि तत् प्रत्यवदद् यथोक्तम् अथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः ॥ 15.

lokādimagniṃ tamuvāca tasmai yā iṣṭakā yāvatīrvā yathā vā |
sa cāpi tatpratyavadadyathoktaṃathāsya
mṛtyuḥ punarevāha tuṣṭaḥ || 15 ||

तम् लोकादिम् अग्निम् तस्मै उवाच। या: इष्टका: यावती वा यथा वा।
स च अपि तत् यथोक्तम् प्रत्यवदत्। अथ अस्य तुष्ट:, पुन: एव आह।

लोकादिम् - the origin of the world अग्निम् - fire तम् - that उवाच - replied
तस्मै - to him (Nachiketas) याः - what type इष्टकाः - bricks यावतीः - how many
वा - or यथा - how वा - or सः - He (Nachiketas) च - and अपि - also
तत् - that (what Yama taught) प्रत्यवदत् - repeated यथों - as told(by Yama)
अथ - then अस्य - at this (repetition) मृत्युः - Yama पुनरेवाह - said again
तुष्टः - being pleased.

Yama then explained that Fire (sacrifice), is the origin of the world. He gave details of what type of bricks and how many are required (for the altar) and how the fire is to be lit. And Nachiketa repeated all the instructions given to him. Then Yama, being pleased at this, said again.

यमाचार्य ने उस स्वर्ग लोक साधक आदि-अग्नि का उपदेश नचिकेता को दिया। उस अग्नि को समझाने के लिए जो भी कुछ इष्ट (आवश्यक) था, जितना और जिस प्रकार से बताना/समझाना चाहिए था, इसके लिए जो भी कुछ कहा गया था, वह सब उसके (नचिकेता के) प्रति कहा। तब उस नचिकेता के संतुष्ट होने पर, यमाचार्य ने फिर कहा।

कुछ विद्वान इस तरह से अर्थ करते हैं: उस स्वर्ग साधक अग्नि के लिए जो-जो ईंटें चाहिए, जितनी मात्रा में चाहिए और जिस प्रकार की चाहिए, वह सब बताया। नचिकेता ने भी जो कुछ सुनकर समझा वह वैसा ही सुना दिया। नचिकेता की कुशाग्र बुद्धि और इच्छा को जानकर प्रसन्न होकर, उसे कहा।

तमब्रवीत्प्रीयमाणो महात्मा वरं तवेहाद्य ददामि भूयः ।
तवैव नाम्ना भवितायमग्निः सृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण ॥ १६ ॥

तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा वरं तव इह अद्य ददामि भूयः,
तवैव नाम्ना भवितायम् अग्निः सृङ्कां च इमाम् अनेकरूपां गृहाण ॥ 16.

tamabravītprīyamāṇo mahātmā varaṃ tavehādya dadāmi bhūyaḥ |
tavaiva nāmnā bhavitāyamagniḥ sṛṅkāṃ
cemāmanekarūpāṃ gṛhāṇa || 16 ||

प्रीयमाण: महात्मा तम् अब्रवीत् । भूय: तव वरम् अद्य इह ददामि। तव एव नाम्ना
अयम् अग्नि: भविता। इमाम् अनेकरूपाम् सृंकाम् गृहाण।

तमब्रवीत् - said to him प्रीयमाणः - pleased महात्मा - the high-souled (Yama)
वरम् - boon तव - to you इह - here अद्य - now ददामि - I give भूयः - again, praising
you **तवैव - indeed by your नाम्ना - name भविता - shall be अयमग्निः - this fire**
सृङ्काम् - garland च इमाम् - and this अनेकरूपाम् - multi-coloured
गृहाण - accept.

That high-souled (Yama) happily, said to Nachiketas "I shall here and now give you another boon: may this fire be named after you; and may you also accept this multi-coloured garland.

बहुत प्रसन्न होकर महात्मा यम ने नचिकेता को कहा, ‘‘आज तुझे वर देता हूँ कि यह अग्नि तेरे ही नाम से प्रसिद्ध होगी। लो अनेक रंगों वाली चमकती हुई यह माला तुम ग्रहण करो।

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू ।
ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमाँ शान्तिमत्यन्तमेति ॥ १७ ॥

त्रिणाचिकेतः त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत् तरति जन्ममृत्यू ,
ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचाय्येमां शान्तिम् अत्यन्तमेति ॥ 17.

triṇāciketastribhiretya sandhiṃ trikarmakṛttarati janmamṛtyū ।
brahmajajñaṃ devamīḍyaṃ viditvā nicāyyemām̐ śāntimatyantameti ॥ 17 ॥

त्रिनाचिकेत: त्रिकर्मकृत त्रिभि: संधिम् एत्य, जन्ममृत्यू तरति।
ब्रह्मजज्ञम् देवम् ईड्यम् विदित्वा इमाम् निचाय्य अत्यंतम् शांतिम् एति।

त्रिणाचिकेतः - thrice-performer of Nachiketa Fire त्रिभिः - with three एत्य - having attained सन्धिम् - unity त्रिकर्मकृत् - performer of the enjoined three-fold duties तरति - transcends जन्ममृत्यू - cycle of births and deaths ब्रह्मजज्ञम् - knower of what is manifested from Brahman देवमीड्यम् - the adorable shining one विदित्वा - having known निचाय्यम् - realizing इमाम् - this शान्तिम् - peace अत्यन्तम् - supreme एति - attains.

He transcends cyclic existence who has performed the Nachiketa fire-sacrifice three times and has received instructions from the three (mother,father and preceptor), and has also discharged his three-fold duties (study of Vedas, performance of Sacrifice and giving alms), having realized the all pervading shining one worthy of worship-the fire god born of Brahman. Such a person also attains supreme peace.

जो कोई भी त्रि-नाचिकेत होगा, वह इन तीनों कर्मों को करके, तीन (अग्नि रूपी) संधियों में से पार होकर, जन्म और मृत्यु को तर जायेगा। इन तीन अग्नियों को पार करना ही ब्रह्म-यज्ञ कहलाता है। जो व्यक्ति दिव्य गुणों से युक्त, स्तुति के योग्य इस ब्रह्मयज्ञ को जान जाता है, वह अत्यंत शांति को प्राप्त करता है।

त्रिनाचिकेत के अंतर्गत तीन नचिकेत अग्नियों की गणना विद्वानों ने अपने-अपने तरीक़े से की है। त्रिणाचिकेत: ब्रह्मचर्य/आहवनीय, गृहस्थ/गार्हपत्य, वानप्रस्थ/दक्षिणाग्नि रूपी तीन अग्नियां। त्रिकर्मकृत: यजन, अध्ययन, दान; ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तीनों के कर्तव्य कर्म ही त्रिकर्मकृत है, या यजन, अध्ययन व दान, या पाकयज्ञ, हविर्यज्ञ व सोमयज्ञ।

त्रिभि: माता, पिता व आचार्य इन तीनों से पूर्ण ज्ञान को पाकर

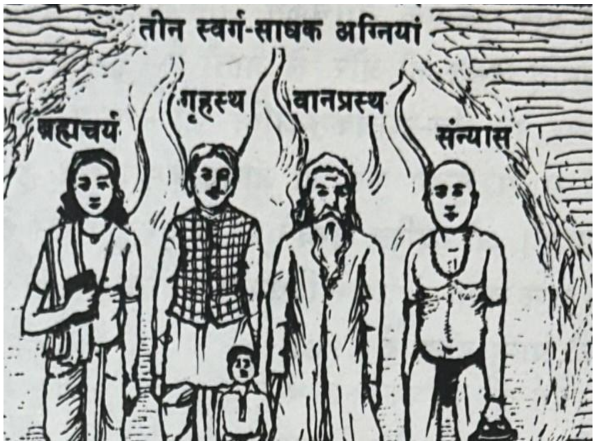

नोट: ब्रह्मचर्य + गृहस्थ; || **गृहस्थ** + **वानप्रस्थ;** ॥ वानप्रस्थ + संन्यास

यही तीन संधियाँ ही त्रिनचिकेत अग्नियां हैं।

त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं विद्वाँश्चिनुते नाचिकेतम् ।
स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ १८ ॥

त्रिणाचिकेतः त्रयमेतत् विदित्वा य एवं विद्वान् चिनुते नाचिकेतम् ,
स मृत्युपाशान् पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके ॥ 18.

triṇāciketastrayametadviditvā ya evaṃ vidvāṁścinute nāciketam |
sa mṛtyupāśānpurataḥ praṇodya śokātigo modate svargaloke || 18 ||

य: त्रिनाचिकेत: विद्वान् एतद् त्रयम् विदित्वा एवम् नाचिकेतम् चिनुते,
स पुरत: मृत्युपाशात् प्रणोद्य शोकातिग: स्वर्गलोके मोदते।

त्रिणाचिकेतः - thrice performer of Nachiketa sacrifice त्रयमेतद् - these three विदित्वा - knowing यः - he एवम् - thus विद्वान् - the knower चिनुते - performs नाचिकेतम् - the Nachiketa fire सः - he मृत्युपाशान् - the chains of death पुरतः - before प्रणोद्य - annhilating शोकातिगो - crossing grief मोदते - rejoices स्वर्गलोके - in the celestial-world.

The man of wisdom, having known the injunctions performs the Nachiketa sacrifice three times. Thus annihilating the noose of death even before the fall of his body, crosses the (ocean of) grief and enjoys in heaven.

तीनों नाचिकेत अग्नियों को जो इस प्रकार जान जाता है और नाचिकेत-अग्नि का जीवन में चयन करता है, वह सामने से ही मृत्यु के पाशों को काटकर, शोक से पार होकर, स्वर्ग लोक में आनन्द भोगता है।

चिनुते - निर्वर्तयति, चयन करता है, पूरा करता है। प्रणोद्य- प्र-णुद् हटाकर, तोड़ कर, काटकर। शोकातिग: शोकान् अतिक्रांत: शोक को पीछे छोड़ कर। पुरतः - सामने से ही, जीते जी ही। शरीरपातात्पूर्वमेव।

एष तेऽग्निर्नचिकेतः स्वर्ग्यो यमवृणीथा द्वितीयेन वरेण ।
एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासस्तृतीयं वरं नचिकेतो वृणीष्व ॥ १९ ॥

एष ते अग्निः नचिकेतः स्वर्ग्यो यम् अवृणीथा द्वितीयेन वरेण,
एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासः तृतीयं वरं नचिकेतो वृणीष्व ॥ 19.

eṣa te'gnirnaciketaḥ svargyo yamavṛṇīthā dvitīyena vareṇa ।
etamagniṃ tavaiva pravakśyanti janāsastṛtīyaṃ
varaṃ naciketo vṛṇīṣva ॥ 19 ॥

नचिकेत:, एष: स्वर्ग्य: अग्नि: ते (उपदिष्ट), यम् द्वितीयेन वरेण अवृणीथा।
जनास: तव एव नाम्नाम् एतम् अग्निम् प्रवक्ष्यन्ति। नचिकेत: तृतीयम् वरम् वृणीष्व।

एषः - this ते - your अग्निः - Fire (sacrifice) नचिकेतः - O Nachiketa स्वर्ग्यः - which leads to heaven यम् - which अवृणीथाः - you chose द्वितीयेन - by the second वरेण - boon एतमग्निम् - this fire तवैव - only by your (name) प्रवक्ष्यन्ति - will designate जनासः - people तृतीयम् - the third वरम् - boon नचिकेतः - O Nachiketa वृणीष्व - choose.

This is your fire, O Nachiketa, which takes one to heaven and which you have chosen as your second boon. People will designate this fire after your name. Now choose your third boon, O Nachiketa.

हे नचिकेत, स्वर्ग साधक जिस अग्नि की तूने दूसरे वर में जानने की जिज्ञासा की थी, उसका ज्ञान-उपदेश तुझे दे दिया। इस अग्नि को लोग तेरे ही नाम से जानेंगे। हे नचिकेत! अब तीसरा वर माँग।

अवृणीथा- वरण किया था, वर रूप में माँगा था।

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके ।
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं वराणामेष वरस्तृतीयः ॥ २० ॥

येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्ये अस्तीत्येके नायम् अस्तीति च एके,
एतद् विद्याम् अनुशिष्ट त्वया **अहम्** वराणामेष वरस्तृतीयः ॥ 20.

yeyaṃ prete vicikitsā manuṣye'stītyeke nāyamastīti caike |
etadvidyāmanuśiṣṭastvayā'haṃ varāṇāmeṣa varastṛtīyaḥ || 20 ||

प्रेते मनुष्ये या इयम् विचिकित्सा, एके अस्ति इति, एके च न अयम् अस्ति इति (कथयन्ति);
त्वया अनुशिष्ट: एतत् विद्याम् (विजानीयाम्) वराणाम् एष: तृतीय: वर: ॥

येयम् - what this प्रेते - being dead विचिकित्सा - doubt मनुष्ये - in man
असि इति एके - exists, some say न अयम् असि इति - this does not exist चैके - and some
एतद् - this विद्याम् - I wish to know अनुशिष्टः - being instructed त्वया - by thee
अहम् - I वराणामेषः - of the boons वरस्तृतीयः - is the third of my boons.

(Nachiketa said):
"Upon the death of a person, there arises this doubt- some declare that something outlives the body, other say, nothing remains. I desire to know, upon your instructions, about this issue and this is my third among the boons".

नचिकेता ने तीसरा वर माँगा। मनुष्य के मर जाने पर जिज्ञासा रहती है। कुछ कहते हैं कि मरने के बाद भी मनुष्य बना रहता है और दूसरे कहते हैं कि नहीं बना रहता। आपसे शिक्षा पाकर मैं यह जानना चाहता हूँ। मेरे माँगे वरों में यही मेरा तीसरा वर है।

प्रेते- मृते मनुष्ये, मर जाने पर, प्र इतः । विचिकित्सा - संशय, संदेह

देवैरत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः ।
अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनम् ॥ २१ ॥

देवैः अत्रापि विचिकित्सितं पुरा न हि सुज्ञेयम् अणुरेष धर्मः,
अन्यं वरं नचिकेतो वृणीष्व मा मा उपरोत्सीः इति मा सृजैनम् ॥ 21.

devairatrāpi vicikitsitaṃ purā na hi suvijñeyamaṇureṣa dharmaḥ |
anyaṃ varaṃ naciketo vṛṇīṣva mā moparotsīrati mā sṛjainam || 21 ||

अत्र देवै: अपि पुरा विचिकित्सितम्। न हि सुविज्ञेयम्, एष: धर्म: अणु: ।
नचिकेत:, अन्यम् वरम् वृणीष्व। मा मा उपरोत्सी:। मा एनम् अतिसृज।

देवैरत्रापि - on this even the Devas विचिकित्सितम् - have been in doubt पुरा - in the distant past न - not हि - indeed सुज्ञेयम् - easy to understand अणुरेषः - this subtle धर्मः - subject अन्यम् - any other वरम् - boon नचिकेतः - O ! Nachiketa ! वृणीष्व - choose मा - me मोपरोत्सीः - do not press अतिसृज - release मा - me एनम् - (from) this.

(Yama said):
" This subtle matter is not easily understood. In the days of yore, even gods had entairtained doubts about this. Therefore, O! Nachiketa! choose another boon. Do not press this and release me from this (Obligation)" .

यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता, बड़े-बड़े विद्वानों ने पहले भी इस विषय में चिन्तन किया है, जिज्ञासा की है। इस विषय को जानना आसान नहीं। यह बड़ा ही अणु-धर्म/ सूक्ष्म विषय है। हे नचिकेता, मुझे इस विषय में बाधित मत करो, तुम कोई और वर माँग लो।

अणु: - सूक्ष्म। उपरोत्सी: - बाधित करना, उपरोधम् मा कार्षी: । अतिसृज: - विमुंच, छोड़ दो, रहने दो।

देवैरत्रापि विचिकित्सितं किलत्वं च मृत्यो यन्न सुज्ञेयमात्थ ।
वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् ॥ २२ ॥

देवैः अत्र अपि विचिकित्सितं किल त्वं च मृत्यो यन्न सुज्ञेयम् आत्थ,
वा चास्य त्वादृग् अन्यो न लभ्यो न अन्यो वरः तुल्य एतस्य कश्चित् ॥ 22.

devairatrāpi vicikitsitaṃ kilatvaṃ ca mṛtyo yanna sujñeyamāttha |
vaktā cāsya tvādṛganyo na labhyo nānyo varastulya etasya kaścit || 22

नचिकेता उवाच - मृत्यो! अत्र किल निश्चितम् पुरा देवै: अपि विचिकित्सितम्। यत् त्वम् च न सुविज्ञेयम् आत्थ (कथयसि); अस्य वक्ता च त्वादृक् अन्य: न लभ्य:, एतस्य तुल्य: अन्य: कश्चित् वर: न अस्ति।

देवैरत्रापि - Even by the gods, this विचिकित्सितम् - has been doubted किल - indeed त्वम् - you च - also मृत्यो - O Death यत् - which न सुज्ञेयम् - not easy to understand आत्थ - say वा - teacher चास्य - and for this त्वादृगन्यो - another like you न - not लभ्यः - obtainable नान्यः - no other वरस्तुल्यः - boon equal to एतस्य - this कश्चित् - any.

(Nachiketa said):
" O! Death! you too say that even the gods had indeed doubted about this
and is not also easy to comprehend. There is neither a teacher equal to you nor a boon equal to this".

नचिकेता ने कहा। अवश्य ही बड़े-बड़े विद्वानों ने इस विषय पर विचार-विमर्श किया है। (और यह समस्या ऐसी है जिसे) हे यम! आप स्वयं ही कह रहे हो कि यह विषय सुगमता से जानने योग्य नहीं है। लेकिन इसके विषय में समझाने वाला आपके बिना और कौन हो सकता है? और मिलेगा भी नही, इसीलिए इस वर के समान कोई और वर नहीं हो सकता।।

किल – निश्चय। आत्थ- कहना

शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्वा बहून्पशून्हस्तिहिरण्यमश्वान् ।
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि ॥ २३ ॥

शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यम् अश्वान् ,
भूमेः महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावद् इच्छसि ॥ 23.

śatāyuṣaḥ putrapautrānvṛṇīṣvā bahūnpaśūnhastihiraṇyamaśvān |
bhūmermahadāyatanaṃ vṛṇīṣva svayaṃ ca
jīva śarado yāvadicchasi || 23 ||

यम: उवाच, शतायुष: पुत्र-पौत्रान् वृणीष्व, बहून् पशून्, हस्ति, हिरण्यम्, अश्वान्,
भूमे: महत् आयतनम् वृणीष्व, स्वयम् च यावत् शरद: इच्छसि (तावत् जीव)।

शतायुषः - hundred years of life पुत्रपौत्रान् - sons and grandsons वृणीष्व - ask for
बहून् - many पशून् - cattle हस्ति - elephants हिरण्यम् - gold अश्वान् - horses
भूमेः - of earth महदायतनम् - vast territory वृणीष्व - choose स्वयम् च - yourself also
जीव - live शरदः - for many years यावदिच्छसि - as you wish.

(Yama said):
"May you seek sons and grandsons who will live a hundred years, cattle, elephants, horses and gold, as also an extensive land area to rule and live any number of autumns as you like.

यम ने कहा - सौ-सौ वर्ष की आयु वाले, पुत्र-पौत्रों को माँग, बहुत सारे पशु, हाथी, घोड़े ओर सोना मांग। भूमि का विशाल क्षेत्र मांग। अपने लिये सैकड़ों वर्षों का या जब तक जीने की इच्छा हो तब तक का जीवन मांग।

वृणीष्व - मांग।

एततुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकां च ।
महाभूमौ नचिकेतस्त्वमेधि कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ २४ ॥

एतत् तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व वित्तं चिरजीविकां च,
महाभूमौ नचिकेतः त्वमेधि कामानां त्वा कामभाजं करोमि ॥ 24.

etattulyaṃ yadi manyase varaṃ vṛṇīṣva vittaṃ cirajīvikāṃ ca |
mahābhūmau naciketastvamedhi kāmānāṃ
tvā kāmabhājaṃ karomi || 24 ||

यदि एतत् तुल्यम् वरम् मन्यसे, वृणीष्व। वित्तम् चिरजीविकाम् च। नचिकेत:,
महाभूमौ त्वम् एधि। त्वा कामानाम् कामभाजम् करोमि।

एतत् - to this तुल्यम् - equal यदि - if मन्यसे - you think वरम् - boon

वृणीष्व - ask for वित्तम् - wealth चिरजीविकाम् - long life च - and

महाभूमौ - of vast kingdom नचिकेतस्त्वमेधि - be thou a king, O Nachiketa

कामानाम् - of all desires त्वा - thee कामभाजम् - enjoyer करोमि - I shall make.

If you think so, seek another boon equal to this for riches, longivity and an expansive kingdom where O! Nachiketa ! May you rule over. I shall make you the enjoyer of all your desires.

यदि इस वर के समान/बराबर कोई और वस्तु समझते हो तो वह मांगो। धन-धान्य, लम्बी आयु मांगो। हे नचिकेता भूमि का विशाल क्षेत्र ले लो (उस पर राज करो)। तुम मुझसे मनोकामना पूरी होने का वरदान मांग लो।

महाभूमौ - महत्याम् भूमौ राजा, । कामभाजम् - कामभागिनम्, इच्छामात्र

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्कामाँश्छन्दतः प्रार्थयस्व ।
इमा रामाः सरथाः सतूर्या नहीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः ।
आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं माऽनुप्राक्षीः ॥ २५ ॥

ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामान् छन्दतः प्रार्थयस्व ,
इमा रामाः सरथाः सतूर्या न हि ईदृशा लम्भनीया मनुष्यैः ,
आभिः मत् प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं माऽनुप्राक्षीः ॥ 25.

ye ye kāmā durlabhā martyaloke sarvānkāmām̐śchandataḥ prārthayasva |
imā rāmāḥ sarathāḥ satūryā nahīdṛśā lambhanīyā manuṣyaiḥ |
ābhirmatprattābhiḥ paricārayasva naciketo
maraṇaṃ mānuprākśīḥ || 25 ||

ये ये कामा: मर्त्यलोके दुर्लभा:, सर्वान् कामान् छन्दत: प्रार्थयस्व। इमा: सरथा:, सतूर्या:, रामा:, ईदृशा: न हि मनुष्यै: लम्भनीया: । आभि: मत् प्रदत्ताभि: परिचारयिष्व। नचिकेत:, मरणम् मा अनुप्राक्षी: (मरणम् अनु मा प्राक्षी:)।

ये ये - whatever कामाः - objects of desire दुर्लभाः - difficult to attain मर्त्यलोके - in the mortal world सर्वान् - all those कामान् - desires छन्दतः - as per your wish प्रार्थयस्व - seek इमाः - these रामाः - beautiful damsels सरथाः - with chariots सतूर्याः - with musical instruments नहि - never ईदृशाः - such लम्भनीयाः - are obtainable मनूष्यैः - by men आभिः - by these मत्प्रत्ताभिः - bestowed by me परिचारयस्व - be entertained नचिकेतः - O Nachiketa मरणम् - about death माऽनुप्राक्षीः - do not query again.

Whatever desires are there which are not easy to be gained in this world of mortals, all those may you obtain as you desire. These beautiful damsels along with chariots and musical instruments, which are not attainable by men, I shall bestow upon you. Entertain yourself with these. Do not seek to know about death.

इस मर्त्यलोक में जो-जो भी दुर्लभ कामनाएँ हैं, उन सबको स्वतंत्र होकर मांग ले। इन रमणीय स्त्रियों को, रथ और गाजे-बाजे सहित, यह सबकुछ मनुष्यों को (आसानी से) प्राप्त नहीं होता, इन सबको तुम ले लो। मैं इन सबको तुम्हें देता हूँ, इनसे तुम अपनी सेवा करवाओ और आनन्द भोगो परन्तु मरण के विषय में मत पूछो।।

छन्दत: - स्व-इच्छानुसार, स्वतंत्र होकर। रामा: - रमयन्ति पुरुषान्, रमणीया। सतूर्या: - स-वादित्रा, गाजे-बाजे सहित। लम्भनीया - प्रापणीया, प्राप्त करने योग्य। परिचारयस्व - परिचर्यस्व, सेव्यो भव, सेवा-सुश्रुषा करवाओ। मा अनुप्राक्षी: - मत पूछो

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्सर्वेंद्रियाणां जरयंति तेजः ।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥ २६ ॥

श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तक एतत् सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः,
अपि सर्वं जीवितम् अल्पमेव तवैव वाहास्तव नृत्यगीते ॥ 26.

śvobhāvā martyasya yadantakaitatsarveṃdriyāṇāṃ jarayaṃti tejaḥ |
api sarvaṃ jīvitamalpameva tavaiva vāhāstava nṛtyagīte || 26 ||

नचिकेता उवाच- हे अन्तक:, श्वोभावा:(श्व अभावो येषाम्), मर्तस्य सर्वेन्द्रियाणाम्
यत् एतत् तेज: जरयन्ति (अपक्षयन्ति)। सर्वम् अपि जीवितम् अल्पम् एव। तव वाहा:, नृत्यगीते तव एव।

श्वोभावाः - not existing tomorrow (श्व अभावो येषाम्) **मर्त्यस्य - of the mortal यत् - what अन्तक - O ! Death ! एतत् - this सर्वेन्द्रियाणाम् - of all the senses जरयन्ति - wear out तेजः - vigour अपि - also सर्वम् - all जीवितम् - life अल्पमेव - is verily short तवैव - for thyself वाहाः - vehicles तव - your नृत्यगीते - dance and song**.

"O! Death! All these are impermanent. The sense organs of man is worn out through indulgence in these enjoyments. The entire life is but brief. You may keep these vehicles, music and dance to yourself.

नचिकेता ने उत्तर दिया- हे अन्तक, हे यम! ये सुख भोग और उसकी सामग्री, श्वोभाव हैं। आज है, कल नहीं। यह सब भोग-विलास, इंद्रियों के तेज (बल) को क्षीण कर देते हैं। इनको भोगने के लिए सारा जीवन भी कम पड़ जाता है। इसलिए यह सब वाहन, हाथी-घोड़े, नाच-गाना आपका ही हो (आप ही रखिये)।

श्वोभावा (श्व+अभावा), श्व - परेद्यु, आने वाला कल। अभावा - नहीं हैं, जो कल होने तक नहीं हैं। श्व: अभावो येषाम्। श्व: आशंसनीय भवति, ह्य: - गत:, हीन: भवति। जरयन्ति - अपक्षयन्ति, नष्ट कर देते हैं, क्षीण कर देते हैं। वाहा - रथ आदि वाहन।

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा ।
जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥ २७ ॥

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तम् अद्राक्ष्म चेत्त्वा ,
जीविष्यामो यावद् ईशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव ॥ 27.

na vittena tarpaṇīyo manuṣyo lapsyāmahe vittamadrākśma cettvāṃ |
jīviṣyāmo yāvadīśiṣyasi tvaṃ varastu me varaṇīyaḥ sa eva || 27 ||

मनुष्य वित्तेन न तर्पणीय: । चेत्, त्वा अद्राक्ष्म: वित्तम् लप्स्यामहे।
जीवितामः यावत् त्वम् ईशिष्यसि। स एव वर: मे तु वरणीय: ।

न वित्तेन - not by riches तर्पणीयः - is satiated मनुष्यः - man लप्स्यामहे - we shall obtain वित्तम् - riches अद्राक्ष्म - have seen चेत् - if त्वा - you जीविष्यामः - we shall live यावत् - so long as ईशिष्यसि त्वम् - you rule वरःतु - however the boon मे - of mine वरणीयः - to be chosen सः - that एव - alone.

No man is ever satisfied with wealth. Having seen you, we shall live as long as you rule. The boon I desire is, therefore, the one I have sought.

मनुष्य धन से तृप्त नहीं होता। यदि हमने तुझे जान लिया, तेरा दर्शन कर लिया, तब समझो धन-धान्य सब प्राप्त हो गया। हे यम! हम उतना ही जी सकते हैं जितना तू चाहेगा (मौत के मुँह में एक दिन तो जाना ही होगा)। मेरा वर तो वही है, जो मैंने माँगा है।।

तर्पणीय - आप्यायनीय, तृप्त किया जाने योग्य, प्रसन्न। अद्राक्ष्म - दृष्टवन्तो वयम्, देख लिया, दर्शन कर लिया।

अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् ।
अभिध्यायन्वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे जीविते को रमेत ॥ २८ ॥

अजीर्यताम् अमृतानाम् उपेत्य जीर्यन् मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन्,
अभिध्यायन् वर्ण-रति-प्रमोदान-अतिदीर्घे जीविते को रमेत॥ 28.

ajīryatāmamṛtānāmupetya jīryanmartyaḥ kvadhaḥsthaḥ prajānan |
abhidhyāyanvarṇaratipramodānatidīrghe jīvite ko rameta || 28 ||

क्वधस्थ: (कु: पृथिवी, अधश्च अधो स्थित:) जीर्यन् (जरामरणवान्) क: मर्त्य: अजीर्यताम् अमृतानाम् उपेत्य, प्रजानन् (विद्वान् जन) वर्णरति प्रमोदान् अभिध्यायन् अतिदीर्घे जीविते रमेत?

अजीर्यताम् - the dissolving one अमृतानाम् - the everlasting उपेत्य - having attained जीर्यन् - being destroyable मर्त्यः - man क्वधःस्थः - on world down below प्रजानन् - being aware of अभिध्यायन् - having examined वर्णरतिप्रमोदान् - the

enjoyment of dance and song अतिदीर्घे - for long जीविते - in life कः - who रमेत - rejoices.

Once the immortal and everlasting one is attained, which man, who is himself nor permanent, will be elated or be thought of living long after examining the worthless enjoyments of song & dance ?

जीर्ण न होने वाली, अमृत अवस्था को प्राप्त करके; इससे उल्टी, जीर्ण होने वाली मरणावस्था को कोई जानबूझकर प्राप्त करके नीच क्यों बने? इन सबका ध्यानपूर्वक विचार करके, सुन्दर रूप, भोग-विलास, आमोद-प्रमोद वाले दीर्घ जीवन में भी कौन मन लगायेगा? ।

अजीर्यताम् - जीर्ण (बूढ़ा) न होने वाला। उपेत्य- प्राप्य, प्राप्त करके। क्वध:स्थ: - कु - पृथिवी, अध: - नीचे, स्थ: - बैठा। वर्ण-रति-प्रमोदान् = वर्ण - रंग-रूप, रति - भोग-विलास, प्रमोदान् - आनन्द देने वाली वस्तुएँ।

यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् ।
योऽयं वरो गूढमनुप्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते ॥ २९ ॥

यस्मिन् इदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत् साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्,
योऽयं वरो गूढम् अनुप्रविष्टो नान्यं तस्मात् नचिकेता वृणीते ॥ 29.

yasminnidaṃ vicikitsanti mṛtyo yatsāmparāye mahati brūhi nastat |
yo'yaṃ varo gūḍhamanupraviṣṭo nānyaṃ tasmānnaciketā vṛṇīte || 29 ||

मृत्यो, यस्मिन् इदम् विचिकित्सन्ति महति साम्पराये (परलोकविषये) यत् अस्ति तत् न(मह्यम्) ब्रूहि। य: अयम् वर: गूढम् अनुप्रविष्ट:, तस्मात् अन्यम् नचिकेता: न वृणीते।

यस्मिन् - in which इदम् - this विचिकित्सन्ति - hold reservations मृत्यो - O Death यत् - what साम्पराये - life after death महति - great ब्रूहि - tell नः - us तत् - that योऽयम् - which this वरः - boon गूढम् - mysterious अनुप्रविष्टः - has entered नान्यम् तस्मात् - nothing other than that नचिकेता - Nachiketa वृणीते - chooses.

O! Death! Instruct me on the superior life after death regarding which people have reservations. Nachiketa chooses not other boon other than this mysterious one.

हे मृत्यु के देव! जिस रहस्य को जानने के लिए सभी जिज्ञासा करते हैं। जिसके लिए महान साम्पराय (परलोक-साधक-कर्म) किये जाते हैं, मृत्यु के बाद आत्मा का जो रूप है, वह मुझे बताइये। मैंने जो वर मांगा है, जो हमारी बातचीत से और रहस्यमयी होता हुआ और भी परिपक्व हो गया है, नचिकेता तो उससे अतिरिक्त और कोई वर नहीं माँगता। ।

साम्पराय - परलोकविषये, परलोक संबंधी।

इति प्रथमा वल्ली : Thus ends the first chapter of Part I